International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 09-11

गजल का फार्म और निराला

डॉ. अरविन्द कुमार यादव

हिन्दी विभाग, शिवाजी कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

कवि होना और कवियों में निराला होना– दोनों बातों की पहचान यदि एक साथ करनी हो तो रमेशचन्द शाह का यह पर्यवेक्षण हमारे बहुत काम का हो सकता है– ''भाषा के प्रति वह जिज्ञासु भाव और उत्सुकता, जो किसी कवि के कवि होने की सबसे प्राथमिक पहचान है, निराला में जितने स्तरों पर जिस निरंतरता के साथ सक्रिय देखी जाती है उतनी और किसी कवि में नहीं।''

भाषा के प्रति यही जिज्ञासा भाव और प्रयोग के प्रति यही उत्सुकता सामासिक पदावली में काव्य रचना करने वाले निराला के लिए उर्दू, पफारसी छंदों, बहरों को अपनाने की मूक प्रेरणा रही है। वैसे तो निराला ने 'कुकुरमुत्ता', 'बेला' ओर 'नये पत्ते' नाम की तीन पुस्तकों में उर्दू के प्रयोग किये, लेकिन गजले या गजलों की जमीन पर कविताएँ 'बेला' में ही लिखी गयीं। प्रश्न उठता है कि ऐसा क्यों है कि जहाँ छायावादियों ने उर्दू काव्य रचना तो दूर उर्दू के चलते प्रयोग, प्रचलित भाषा और मुहावरे तक नहीं अपनाये वहीं दूसरी ओर उसी समय निरला ने 'बेला' में न सिपर्फ उर्दू शैली के छन्द अपनाये, बल्कि गजल शैली का भी प्रयोग किया? दूसरा प्रश्न यह कि कविता को उसके अभिजात प्रसंगों से मुक्त करने वाले निराला ने कविता की यह अभिजात पारम्परिक शिल्प–विध क्यों अपनायी? चूँकि हमारे आलेख का विषय है– ''गजल का पफार्म और निराला'' इसलिए इन प्रश्नों के उत्तर तलाशने से पूर्व हमारे लिए यह जानना अति आवश्यक हो जाता है कि – गजल क्या है, गजल का स्वरूप और उसकी परिभाषा क्या है उसका मिजाज कैसा है।

गजल मूलतः अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है– औरत से बातें करना या रमणी का रूप वर्णन अथवा नारी से प्रणय वार्ता। कुछ विद्वान यह भी मानते हैं कि गजल पफारसी का शब्द है जिसका अर्थ है मृगनयनी। एक भिन्न मत के अनुसार पफारसी में 'गजल' का अर्थ होता है हिरन और जो उसका बच्चा होता है, उसे गजाला कहा जाता है। शायद गजल शब्द गजाला से ही बना हो। कुल मिलाकर गजल की सीधी–साधी और सरल परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि– मन के भावों को शेरों के माध्यम से अभिव्यक्ति करने की कला का नाम गजल है। ;हिन्दी गजल गजलकारों की नजर में– सरदार मुजावर, पेज 15–16द्ध

जैसा कि आप जानते हैं कि – उर्दू गजल का अपना एक मिजाज रहा है। उसका बुनियादी मिजाज तो आशिकाना है। पिफर भी उसमें दर्द, जुदाई, पैमाना, गुला–बुलबुल सागरों मीना था। प्रेमिका के शरीर की प्रशंसा, शराब व पफूलों की तारीपफ आदि का जिक्र होता रहा है। इस प्रकार गजल मूलतः श्रृंगारिक भावों की अभिव्यक्ति की विध रही है। परन्तु देश काल परिस्थितियों के हिसाब से उसमें कापफी परिवर्तन भी आया है। आज की गजलों में केवल नाजुक भावों की अभिव्यक्त नहीं होती, बल्कि जिंदगी के कड़वे अनुभवों की भी अभिव्यक्ति हो रही है। अतः हम कह सकते हैं कि आज की गजल तो समयगत सच्चाईयों का आईना ही बन गयी है।

आपको मालूम होगा कि – उर्दू में गजल की मूल ईकाई की दो पंक्तियाँ होती है जिन्हें शेर कहते हैं। वही कई शेर मिलकर एक दूसरी ईकाई भी बनाते हैं जिसे गजल कहते हैं। गजलें भी कई प्रकार की होती हैं– कुछ गजलों के शेर परस्पर समान भाव की भूमिका पर समावित होते हैं तब उन्हें 'नज्म' कहा जाता है। इसमें भावपक्ष प्रधन होता है। एक गजल में कम से कम पाँच शेर होना चाहिए। गजल में सात, नौ, ग्यारह के क्रम के शेर पाये जाते हैं वास्तव में गजल का हर शेर अपने आप में स्वतंत्रा होता है ओर इसमें सिलसिला का कम ख्याल रखा जाता है। एक शेर का दूसरे शेर से संबंध हो, यह जरूरी नहीं है। भूलकर भी गजल बे–बहर नहीं होनी चाहिए अतः बहरों का बन्धन गजल की अनिवार्य शर्त है। गजल का संगीत से भी वैसा ही गहरा जुड़ाव रहा है जैसे बादल–बिजली, चन्दन पानी का।

निराला की गजलों पर बात करने से पूर्व हिन्दी गजल की परम्परा का बोध आवश्यक हो जाता है। इसलिए हिन्दी गजल की परम्परा पर एक नजर डालते हैं।

वैसे तो गजल पफारसी उर्दू की एक लोकप्रिय विध है यहीं से यह हिन्दी तथा उर्दू में आयी। पफलस्वरूप हिन्दी में गजल की एक पूरी परम्परा चल पड़ी। जिसका श्रेय आदिकाल के नामवर कवि अमीर खुसरो को जाता है। तेरहवीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने पहली गजल कही – कुछ शेर देखिए–

जब यार देखा नैर भर दिल की गई चिंता उतर
ऐसा नहीं कोई अजब राखे उसे समझाय कर।।

खुसरो की एक गजल ऐसी है जिसकी एक पंक्ति पफारसी में और दूसरी हिन्दी में है। पफारसी और खड़ी बोली के मिलाप से उनकी गजलों में नया रंग दिखाई देता है। इसी परम्परा के क्रम में दूसरा नाम कबीर का लिया जाता है, जिसने हिन्दी में गजल कही – वो भी बोली और भाषा में कुछ शेर द्रष्टव्य हैं।

हमन है इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या
रहे आजाद या जग से हमन दुनियाँ से यारी क्या
न पल बिछुड़े पिया हमसे, न हम बिछुड़े पियारे से
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या।

आधुनिक युग के प्रवर्तक भारतेन्दु ने भी 'रसा' उपनाम से गजल विध में हाथ आजमाया। उनकी गजलों पर उर्दू की शैली का बहुत प्रभाव रहा है। गजल की कसौटी पर भी उनकी गजलें खरी उतरती हैं। भारतेन्दु की गजलों के कुछ शेर प्रस्तुत हैं–

दिल मेरा ले गया वपफा
बेवपफा हो गया वपफा करके।

ग ग ग

दोस्त कौन मेरली तुरबत पे
रो रहा है रसा–रसा करके।

कहना न होगा कि कोई भी व्यक्ति, रचना या रचनाकार परम्परा के क्रम में ही हुआ करता है और परम्पराएँ ही उसकी जमीन बनती हैं निराला भी इसके अपवाद नहीं।

निराला के गजल लेखन के सम्बन्ध में कई प्रश्न आलोचकों ने उठाये हैं जैसे कि उनके गजल लेखन की मूल प्रेरणा क्या है? और

यह कि कविता को अभिजात प्रसंगों से मुक्त करने वाले निराला ने यह अभिजात पारम्परिक शिल्प विध क्यों अपनायी? जहाँ छायावाद के किसी कवि ने उर्दू की ओर कोई दिलचस्पी नहीं दिखलाई वहीं निराला ने गजल शैली में रचना की? आदि–आदि।

रामविलास शर्मा ने निराला की जीवनी में उनके गजल लेखन की मूल प्रेरणा में दो बातों का उल्लेख किया है पहली यह कि निराला पिफराक गोरखपुरी तथा अंग्रेजी दा हिन्दी लेखकों द्वारा हिन्दी कविता और भाषा की खिल्ली उड़ाये जाने से सन्तप्त तथा उर्दू के आदर से प्रभावित होकर लिखने का निश्चय किया। बतौर रामविलास शर्मा – दूसरी यह कि इनके मन में शायद यह भावना थी कि उर्दू में लिखने से ख्याति मिलती है और हिन्दी गँवारों की भाषा है।

जहाँ तक मेरा मानना है कि रामविलास शर्मा का यह तर्क कुछ हजम नहीं होता। हमें यह ताकीद करनी होगी कि निराला ने उर्दू काव्य रचना उन कतिपय वर्षों में आरम्भ की जब हिन्दी में प्रगतिवादी आन्दोलन चल रहे थे और प्रगतिवादी भाषा को सरल बनाने का जोरदार आग्रह कर रहे थे। यह बात भी लक्ष्य करने योग्य है कि उर्दू शैली की इन रचनाओं में निराला की विचार दृष्टि प्रगतिशीलता के कापफी हद तक करीब हैं। इस आधर पर यह कहना अनुचित न होगा कि निराला के उर्दू शैली काव्य लेखन की मूल प्रेरणा प्रयोग और प्रगतिवाद था।

दूसरा यह कि छायावादियों के उर्दू की ओर दिलचस्पी न होने का कारण मुख्यतः यह है कि छायावादी कवि वस्तु के क्षेत्रा में ही नहीं, भाषा के क्षेत्रा में भी सौन्दर्यवादी थे। एक तो उनकी भावात्मक प्रेरणा संस्कृत व अंग्रेजी काव्य और भाषा सौन्दर्य से ली गई थी जिससे उर्दू का कोई मेल नहीं बैठता था। दूसरे उन कवियों ने जिस प्रकार की भावप्रधन काव्य रचना की है, उसमें उर्दू की चमत्कार प्रधन और मुक्तक शैली की काव्यकृतियों के लिए कोई अवकाश न था।

हम यहाँ बेला की उर्दू कविताओं की चर्चा करेंगे जिसमें न केवल उर्दू के छन्द अपनाएँ गए हैं, बल्कि गजल शैली का भी प्रयोग किया गया है मसलन गजल के पफार्म के आधर पर निराला के गजलों का मूल्यांकन करेंगे। जहाँ पफार्म का आशय है संगति अर्थात् पफार्म वह है जिसमें भाव के साथ रूप की पूर्ण संगति हो। बेला में निराला द्वारा रचित लगभग 35–36 गजलें संग्रहित हैं। इसकी भूमिका में निराला ने लिखा है– 'बढ़कर नई बात यह है कि अलग–अलग बहरों की गजलें भी हैं जिनमें पफारसी के छन्दशास्त्रा का निर्वाह किया गया है काव्य की कसौटी भी है।' जैसा कि आप सभी जानते हैं कि उर्दू गजलें सुनिश्चित बहरों पर आधरित होती है। बेला की उर्दू की – 'मुतपफायलुन मपफायलुन मपफायलुन पफइल' बहर के वजन पर निर्मित गजल द्रष्टव्य है–

ये टहनी से हवा की छेड़छाड़ थी मगर
खिलकर सुगन्ध से किसी का दिल बहल गया
खामोश पफतह पाने को रोका नहीं रूका
मुश्किल मुकाम जिन्दगी का जब सहल गया।। ;बेला पृ. 75द्ध

इसी प्रकार पफारसी की बहर 'पफायलातुन पफायलातुन पफायलातुन पफायलातुन' के वजन पर निर्मित 27 मात्राओं का एक छन्द देखिए–

भेद खुल जाए वह सूरत हमारे दिल में है
देश को मिल जाए जो पूँजी तुम्हारे मिल में है।। ;बेला पृ. 59द्ध

इस प्रकार हम देखते हैं कि निराला की गजलें बहरों पर आधरित है और उनमें उर्दू और पफारसी छंदशास्त्रा का बखूबी निर्वाह भी हुआ है।

प्रश्न उठता है कि निराला की गजलों का वर्ण्य विषय क्या है? वर्ण्य विषयों को यदि एक शेर के माध्यम से स्पष्ट करें तो वह यह हो सकता है–

एहसास के पहलू में, जज्बात के पहलू में।
पलती है गजल अब तो, हालात के पहलू में।।

कहना न होगा कि निराला के गजलों का विषय यही हालात ही है, जो कभी निराला के व्यक्तिगत हालात के रूप में तो कभी जमीन के हालात के रूप में हमारे सामने आता है।

सम्भव है निराला ने अपने इसी व्यक्तिगत दुःखी जीवन को लेकर लिखा है–

बाहर मैं कर दिया गया हूँ
भीतर पर भर दिया गया हूँ।। ;बेला 57वीं गजलद्ध

इसी प्रकार 78वीं गजल में भी निराला ने जीवन की रिक्तता के बारे में लिखा है–

नभ की सुदूरता से उँचे जीवन के क्षण अब है छूटे,
आकर्षण के अभिमानी के गतिक्रम को जब वे तोड़ चुके।।

इसके अतिरिक्त निराला ने क्रांतिकारी विषयों वाली गजलें भी लिखी जैसे ''समाज ने सर उठाया है राज बदला है।'' ;गजल सं. 50द्ध

उपर्युक्त गजलों के अतिरिक्त बेला मे गजल की जमीन पर लिखी प्रकृति–विषयक गजलें भी मिलती हैं। ;15.16.19द्ध प्रेम पर आधरित गजले भी हैं यद्यपि कि इनमें उर्दू गजल की सी लय है तदपि इसमें शमा–परवाना वाली पद्यति का वैसा निर्वाह नहीं मिलता जैसा उर्दू गजलों में प्रायः देखा जाता है। और न ही प्रेमियों के जूल्म, रकीबों के शिकवे तथा प्रेमिका के हुस्न की तारी न अदाएँ ही मिलती हैं, जो उर्दू गजलों की प्राण होती है। इनमें हिन्दी गीतों का सा रंग आ गया है। कहीं–कहीं तो गीत और गजल का मिश्रण इस प्रकार हो गया है कि दोनों में किसी एक की भी विशेषता नहीं उभर सकी है।

निराला ने बेला की गजलों में कई प्रकार के प्रयोग किये हैं इन प्रयोगों के आधर पर इन्हें हम तीन प्रकारों में बाँट सकते हैं – प्रथम वे जिनमें विशिष्ट रुप से उर्दू का प्रयोग है – जैसे

निगह तुम्हारी थी, दिल जिससे बेकरार हुआ
मगर मैं गैर से मिलकर निगाह के पार हुआ। ;बेला पृ. 29द्ध

दूसरा – वह जिसमें उर्दू छंद है और विशु(संस्कृत पदावली है –

अशब्द हो गयी वीणा,
विभास बजता था।
अनिय क्षरण नवजीवन समास बजता था।
कलुष मिला, मनसिज की विदग्ध्ता पफैली।
चल उगलियाँ रूकी डरकर विलास बजता था। ;बेला पृ. 29द्ध

तीसरा – हिन्दी उर्दू संस्कृत मिश्रित है–

वही नवीना सजीं और वही बजी वीणा
शराबो प्याले का अब तक न बहिष्कार हुआ।

निराला के इस प्रयोग को कुछ आलोचकों ने बेमेल खिचड़ी माना तो कुछ ने कहा कि संस्कृत की परम्परा उर्दू पफारसी की परम्परा से कभी भी स्वीकृत नहीं हुई अतएव उन्हें मिलाने का अनुक्रम कोई सपफल प्रयोग नहीं है। आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी ने भी इस पर आपत्ति उठाई है और कहा– ''उर्दू पफारसी के छंदों में विशु(संस्कृत पदावली का प्रयोग कोई नैसर्गिक प्रयास नहीं कहा जा सकता है। इसी कारण बेला की संस्कृत पदावली वाली गजलें अच्छी तरह निखर नहीं सकी। जहाँ तक हिन्दी उर्दू मिश्रित गजलों का प्रश्न है निराला की सपफलता इसमें सबसे अध्कि दिखाई देती है।

यह सही है कि गजल जैसी पारम्परिक विध पर निराला जैसा विद्रोही मन जम नहीं पाया, पफलतः गजलों की पारम्परिक विध अपनाते हुए भी निराला ने गजल की संवेदना का अपनी गजलों में लगभग परित्याग कर दिया है। दूध्नाथ सिंह ने भी लिखा है– 'इसका कारण था कि यह विध ही उनके स्वभाव और संस्कारों के प्रतिकूल पड़ती है।

यद्यपि कि भाषा की दृष्टि से उनमें दोष हो सकते हैं लेकिन छंदों की दृष्टि से उनकी सपफलता असंदिग्ध है। क्या यही कम है कि निराला ने गजलों के हिन्दी करण की चेष्टा की, जिसके परिणाम स्वरूप आज हिन्दी में बहुत सी अच्छी गजलें हिन्दी शब्द–चयन के साथ लिखी गयीं। आज जब नई कविता पर, जिसमें उर्दू बहरों को बहुत प्रोत्साहित किया गया है, निराला की कविता का बहुत प्रभाव पड़ा है। जिस प्रकार 'मुक्तछंद' की परम्परा को निराला के प्रयोग पर आगे बढ़ाया गया उसी प्रकार बहर का प्रयोग भी। इस प्रकार नई कविता और बहर का लयाधर उन्हीं की अनुकृति में ग्रहण किया गया।

कुछ आलोचकों को ये प्रयोग अटपटा भले ही लगे लेकिन हिन्दी–उर्दू की वर्तमान मैत्राी की जबरदस्त ऐतिहासिक भूमिका के निर्माण का महत्वपूर्ण प्रयास किया। परिणामस्वरूप एक सेकुलर भाषा का रूप हमारे सामने रखा और निसंदेह हिन्दी की शक्ति को नये–नये क्षेत्राों में परखा।